8:13
sample_9084.pdf
content.kopykitab.com

नगरीय भूगोल

[Urban Geography]

नगरीय भूगोल

[Urban Geography]

8:13 5G
sample_9084.pdf
content.kopykitab.com

पाठ्यक्रम

इकाई-1 नगरीय भूगोल की प्रकृति एवं विषय-वस्तु, विभिन्न उपागम एवं नूतन प्रवृत्तियाँ, नगरीय अधिवास की उत्पत्ति एवं विकास। कार्यिक वर्गीकरण।

Nature and scope of Urban Geography, different approaches and recent trends in Urban Geography; origin and growth of urban settlements : functional classification.

इकाई-2 नगरीय प्रणाली, नगरीय वृद्धि एवं सिद्धांत, नगरीय पदानुक्रम, केन्द्रीय स्थिति सिद्धांत, क्रिस्टालर एवं लॉश का सिद्धांत, नगरीय अधिवास अध्ययनों में भारतीय भूगोल वेत्ताओं का योगदान। उपनिवेशकाल की उपनिवेशोत्तर संरचना।

Urban systems : Urban growth and theories. Urban hierarchy, Central Place theory of Christaller and Losch. Contributions of Indian scholars to the studies of urban settlements, Urban economic base : basic and non-basic functions, input-output models, concepts of dualism; colonial and post-colonial structure.

इकाई-3 नगरीय आकारिकी, नगर क्रोड, व्यावसायिक, औद्योगिक तथा रिहायशी क्षेत्र, आधुनिक नगरीय भूदृश्य, भारतीय नगरीय अधिवासों की आकारिकी।

Urban morphology-city core, commercial, industrial and residential areas; modern urban landscape. Morphology of Indian urban settlements and its comparison with Western urban settlements.

इकाई-4 भूमि उपयोग मॉडल, संकेंद्रीय क्षेत्र सिद्धांत, सेक्टर मॉडल, बहुनाभिक मॉडल, नगर-प्रदेश, नगरीय प्रसार, प्रभाव प्रदेश, समसामयिक नगरीय मुद्दे।

Land use models : concentric zone theory, sector model, multiple nuclei Model; city-regions, urban expansion, umland and periphery, Contemporary urban issues.

इकाई-5 भारत के संदर्भ में नगरीय नीतियाँ तथा नियोजन, लघु एवं मध्यम आकार के नगरों का विकास, नवीन वार्डों का नियोजन, नगर नियोजन, हरित पट्टी, उद्यान नगर, नगरीय नीतियाँ, तृतीय विश्व के देशों में नगर नियोजन व समकालीन मुद्दे, नगरीय नियोजन तथा वैश्वीकरण, नगरीय भूमि उपयोग नियोजन।

Urban Policy and Planning : Development of medium and small sized towns, planning for new wards, city planning, green belts, garden cities, urban policy; contemporary issues in urban planning; Globalization and urban planning in the Third Word, urban land use planning with special reference to India.

●●●

अनुक्रमणिका

1. नगरीय भूगोल की प्रकृति एवं विषय-वस्तु 01

8:13 sample_9084.pdf content.kopykitab.com

अनुक्रमणिका

1. नगरीय भूगोल की प्रकृति एवं विषय-वस्तु 01
(Nature and Scope of Urban Geography)

2. नगरीय भूगोल के विभिन्न उपागम एवं नूतन-प्रवृत्तियाँ 17
(Different approaches and recent trends of Urban Geography)

3. नगरीय भूगोल की उत्पत्ति एवं विकास 27
(Origin and Growth of Urban Geography)

4. नगरों का कार्यात्मक वर्गीकरण 41
(Functional Classification of Towns)

5. नगरीय प्रणाली, वृद्धि एवं सिद्धांत 65
(Urban System, Growth and Theory)

6. नगरीय पदानुक्रम : केन्द्रीय स्थिति सिद्धांत-किस्टॉलर एवं लॉश 90
(Urban Hierarchy : Central Place Theory-Christaller and Lasch)

7. नगरीय अधिवास अध्ययनों में भारतीय भूगोलवेत्ताओं का योगदान उपनिवेशकालीन एवं उपनिवेशोत्तर संरचना 109
(Contribution of Indian Scholars to the studies of Urban Settlement, Colonial and Post Colonial Structure)

8. नगरीय आकारिकी 124
(Urban Morphology)

9. नगरीय आकारिकी : व्यावसायिक, औद्योगिक तथा (आवासीय) रिहायशी क्षेत्र 144
(Urban Morphology : Commercial, Industrial and Residential Areas)

10. भारतीय नगरीय अधिवासों की आकारिकी 178
(Morphology of Indian Urban Settlements)

11. भूमि उपयोग मॉडल : सकेन्द्रीय सिद्धान्त, सेक्टर व बहुनाभिक मॉडल 199
(Land Use Models : Concentric Zone Theory, Sector and Multiple Nuclear Model)

12. नगर प्रदेश और नगरीय प्रादेशिकता 211
(City Regions and Urban Regionalism)

13. नगर प्रभाव क्षेत्र व उसकी सीमाएँ (परिधी) 226
(Umland and Periphery)

14. समसामयिक नगरीय मुद्दे 239
(Contemporary Urban Issues)

15. भारत में नगरीयकरण व नगरों का विकास 248
(Urbanisation in India and Development of Towns)

16. भारत में नगर नियोजन 291
(Town Planning in India)

●●●

1

8:13 5G
sample_9084.pdf
content.kopykitab.com

नगरीय भूगोल की प्रकृति एवं विषय-वस्तु
(NATURE AND SCOPE OF URBAN GEOGRAPHY)

भूगोल की एक प्रमुख शाखा के रूप में- नगरीय भूगोल का अध्ययन किया जाता है। **20वीं शताब्दी के मध्यान्तर से ही नगरीय भूगोल का महत्व बढ़ना शुरू हो गया था।** पिछले पाँच-छह दशकों में अनेक भूगोलवेत्ताओं ने नगरीय क्षेत्रों तथा नगरीय समस्याओं पर अपना ध्यान केन्द्रित किया है। हम यहाँ इस अध्याय में नगरीय भूगोल की प्रकृति का विस्तृत अध्ययन करेंगे।

नगरीय भूगोल, भूगोल विषय की नवीनतम शाखा है। भूगोल के अंतर्गत वर्तमान समय में इस शाखा का महत्व बढ़ते जा रहा है क्योंकि प्रारम्भिक काल से ही नगर, उत्थान, उत्कर्ष तथा सभ्यता के प्रतीक रहे हैं। जनसंख्या और तकनीकी ज्ञान की प्रगति के परिणामस्वरूप नगर और उसकी आर्थिक व्यवस्था अत्यन्त जटिल हो गयी है। अतः आज का नगरीय भूगोलविद न केवल इन समस्याओं पर प्रकाश डालने अपितु इनके लिये व्यावहारिक समाधान खोजने में भी लगा हुआ है। समस्याएँ चाहे मानवीय हों अथवा परिस्थितिजन्य। तेजी से बदल रही परिस्थितियों में इस विषय की अर्थवत्ता और उपादेयता बनाये रखने के लिये, ऐसे कार्य वस्तुतः आवश्यक भी हैं। **एल.एफ. थोमस** के अनुसार **''मानव जीवन में नगरों का इतना अधिक प्रभाव है कि बड़े सामाजिक उत्तरदायित्व को अभिव्यक्त करने के लिए हम जिस शब्द का उपयोग करते हैं वह 'नागरिकता' कहलाती है।** सभ्यता और नगर इन दोनों में न केवल व्युत्पत्तिमूलक (Etymological) सम्बन्ध है, इसलिए इस प्राचीन कथन से सत्यता का काफी अंश है कि **''नगर उतने ही प्राचीन हैं जितनी मानव सभ्यता''**[1] यद्यपि नगरों का इतिहास काफी प्राचीन है, लेकिन नगरों का क्रमबद्ध अध्ययन अर्थात् नगरीय भूगोल का इतिहास नया है। नगरीय भूगोल का अध्ययन अधिकांशतः वर्तमान शताब्दी की ही देन है। अतः वर्तमान में नगरीय भूगोल एक अत्यन्त महत्वपूर्ण शाखा के रूप में प्रतिष्ठित हो चुका है। आज इसका क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है और नगरीयकरण तथा नगरों की बढ़ती हुई भूमिका एवं महत्व के साथ-साथ नगरीय भूगोल का क्षेत्र और इसकी संकल्पनायें विकास करती जा रही हैं। नगरों के माध्यम से ही भिन्न-भिन्न प्रदेशों के बीच वस्तुओं एवं विचारों का सम्बन्ध एवं संगठन स्थापित होता है। नगरीय केन्द्र या क्षेत्र मूलतः 'प्रदेशों' के रूप में मिलते हैं। वे मानव जनसंख्या के, जो भिन्न-भिन्न आकार की बस्तियों के रूप में पायी जाती है, बड़े-बड़े और अत्यन्त सघन समूहों के रूप में है और मानवीकरण की मात्रा तथा जटिलता सबसे अधिक इन्ही नगरीय बस्तियों में देखने को मिलती है। इसके विपरीत, ग्रामीण क्षेत्रों की बस्तियों का आकार सामान्यतया छोटा एवं जनसंख्या का घनत्व भी आमतौर से काफी कम होता है। नगरीय क्षेत्रों में ही मनुष्य के अधिकांश अप्राथमिक उत्पादन तथा इस तरह की क्रियायें केन्द्रित होती हैं। इन सभी बातों से स्पष्ट है कि **''आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टियों से, नगर जितने क्षेत्रों पर स्थित हैं उनके अनुपात में इनका महत्व बहुत ही अधिक है।''**[2] पाश्चात्य सभ्यता जो आज लगभग समूचे विश्व पर छायी हुई है, इसकी एक प्रमुख विशेषता ग्राम्य जीवन से नगरीय जीवन की तरफ पदार्पण करना है।

किग्सली डैविस ने नगरों के अध्ययन को चार मुद्दों में इस प्रकार स्पष्ट किया है। (1) नगर भाषा, धर्म, परिवार आदि बहुत से सामाजिक पहलुओं की तुलना में काफी नये हैं; (2) नगर, मूलभूत आर्थिक एवं प्राविधिक विकासों का परिणाम होने के साथ पूरे सामाजिक जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तनों के भी जनक

1. It is an old saying that "cities are as ancient as civilization. yet the etymlogical kinship expresses a depth of truth that is not always fully appreciated"– *A.E. Smailes, The Geography of Towns, London, 1962 p. 7.*
2. "Cities are economically, socially and politically important out of all proportion to the areas they occupy."–*Harold M. nayer. `Urban Geography.' American Geography, Inventory and Prospect, 1954, p. 143*

हैं; (3) नगर सम्पूर्ण समाज के भीतर शक्ति और प्रभाव के केन्द्र हैं; (4) नगरीकरण इस समय भी जारी है और इससे जनित बहुत-सी समस्याएँ अभी भी हल नहीं की जा सकी है। नगरों का महत्व एवं नगरीय सुविधाएँ सभी का ध्यान अपनी तरफ आकर्षित करती हैं, लेकिन ''भूगोल तथा कुछ अन्य विषयों के अध्ययन-कर्त्ताओं का ध्यान इनकी तरफ विशिष्ट रूपों में आकर्षित होता है।''[1]

नगर (Town) नगरीय क्षेत्र या नगरीय बस्ती पृथ्वी की सतह पर स्थिति एक छोटी प्रादेशिक इकाई है जिसमें मानव जनसंख्या सघन बस्ती के रूप में निवास करती है। अतः भूगोलवेत्ता का ध्यान इतने महत्वपूर्ण

8:13 sample_9084.pdf content.kopykitab.com

नगर (Town) नगरीय क्षेत्र या नगरीय बस्ती पृथ्वी की सतह पर स्थिति एक छोटी प्रादेशिक इकाई है जिसमें मानव जनसंख्या सघन बस्ती के रूप में निवास करती है। अतः भूगोलवेत्ता का ध्यान इतने महत्वपूर्ण 'स्थान' या 'क्षेत्र' की तरफ जाना स्वाभाविक है जिस (स्थान) का मुख्य कार्य अप्राथमिक कार्यों के केन्द्र के रूप में कार्य करना है, क्योंकि भूगोल का सम्बन्ध मूलतः पृथ्वी की सतह पर पायी जाने वाली उन क्षेत्रीय भिन्नताओं से है जो मानव एवं उनकी क्रियाओं से किसी न किसी रूप में सम्बन्धित अवश्य हैं। नगर के प्रति भूगोलवेत्ता का दृष्टिकोण आम लोगों से अलग करके आगे स्पष्ट किया गया है।

भूगोल में नगरीय भूगोल की स्थिति (Position of Geography in Urban Geography)— रिचर्ड हार्टशोर्न के अनुसार **''भूगोल पृथ्वीतल की विभिन्नताओं का विज्ञान है।'' प्रत्येक विज्ञान तथ्यों का यथार्थ क्रमबद्ध और युक्तिसंगत वर्णन तथा व्याख्या करता है।''**[2] मनुष्य भौगोलिक अध्ययनों का केन्द्र है, जिससे सम्बन्ध रखने वाली पृथ्वीतल की क्षेत्रीय असमानताओं का विश्लेषण किया जाता है। भिन्न-भिन्न 'स्थानों' पर भौतिक तथा सांस्कृतिक दोनों तरह के पर्यावरण के तत्वों में जो समानता या भेद मिलते हैं उन्हीं का वैज्ञानिक ढंग से अध्ययन भूगोल का विषय क्षेत्र है, अर्थात् दूसरे शब्दों में भूगोल का सम्बन्ध वस्तुओं या तथ्यों के स्थानात्मक वितरण से है। वर्तमान भौगोलिक दृष्टिकोण की सबसे बड़ी विशेषता है भिन्न-भिन्न क्रियायें, पहलू या वस्तुयें पृथ्वी की सतह या उसके किसी भाग विशेष पर कहाँ, कैसे और क्यों, स्थित अथवा वितरित है— इसका तथ्यात्मक, व्यवस्थित और तर्क सम्मत उत्तर प्राप्त करना होता है। पृथ्वी तल की संकल्पना में मनुष्य का समूचा कार्य क्षेत्र सम्मिलित माना जाता है।

भूगोल की दो बड़ी शाखायें हैं— भौतिक भूगोल तथा **मानव भूगोल।** भौतिक भूगोल की सामग्री के रूप में भौतिक तत्व हैं, जबकि मानव भूगोल के अन्तर्गत सम्पूर्ण भौगोलिक (भौतिक एवं सांस्कृतिक) परिस्थितियों से अन्योन्यक्रिया में व्यस्त मानव तथा उसके भिन्न-भिन्न तरह के कार्य आते हैं जो भिन्न-भिन्न स्थानों पर असमान रूप से वितरित है। मानव कार्यों के भिन्न-भिन्न रूपों के आधार पर मानव भूगोल की कई महत्वपूर्ण शाखायें हैं जिनमें प्रमुख हैं— आर्थिक भूगोल, बस्ती भूगोल, जनसंख्या भूगोल, राजनैतिक भूगोल, ऐतिहासिक भूगोल, प्रजातीय भूगोल इत्यादि। कृषि भूगोल, औद्योगिक भूगोल, बाजार भूगोल तथा यातायात भूगोल आर्थिक भूगोल की ही उपशाखाओं के रूप में देखे जाते हैं। आर्थिक भूगोल तथा जनसंख्या भूगोल से अत्यन्त निकट का सम्बन्ध रखते हुए भी नगरीय भूगोल वस्तुतः मानव भूगोल की उस महत्वपूर्ण शाखा का अंग है जिसे बस्ती भूगोल कहते हैं।

''बस्ती भूगोल का सम्बन्ध उन सुविधाओं से है जिन्हें मनुष्य भूमि पर बसने की प्रक्रिया में निर्मित करता है।''[3] किसी भी क्षेत्र में मानव बसाव मकानों तथा उनसे बनी हुई बस्तियों के रूप में होता है और इन्हीं मानव बसाव की इकाइयों के भीतर तथा बाहर भी गमनागमन के मार्ग शरीर की नाड़ियों की तरह फैले होते हैं जिनका कार्य वस्तुओं, मनुष्यों एवं विचारों का स्थानान्तरण करके भिन्न-भिन्न क्षेत्रों के बीच कार्य सम्बन्ध स्थापित करना है। आवासीय मकान तथा अन्य भिन्न-भिन्न कार्यों के उद्देश्य से निर्मित भवन या निर्माण इन सभी को 'मकान' के अर्थ में शामिल करते हैं। किसी प्रदेश के सभी प्रकार के मकानों तथा

1. Davis Kigsley, "Origin and Growth of Urbanization in the World," *–A.J.S., 40, 1955 p. 429*
2. "Geography is concerned with accurate, orderly and rational description and interpretation of the variable character of the earth's surface." *–Richard Hartshore.*
3. "In general, settlement geography has to do with the facilities men build in the process of occupying an area....settlement features *per se,* and in their groupings."
–C.F. Kohn "Settlement Geography," American Geograpy, Inventory and Prospect, 1954, p. 125

उनके समूहन (Groupings) एवं संगठन का भौगोलिक दृष्टिकोण से अध्ययन बस्ती भूगोल कहलाता है। **'बस्ती भूगोल का सम्बन्ध न केवल स्थायी कृषि निवास के चारों तरफ एकत्रित भवनों से है, बल्कि शिकारी या चरवाहे के अस्थायी डेरे से तथा उन बस्ती-पुंजों या समूहों से भी है जो पैमाने में पूरवा से लेकर ग्राम, कस्बा, शहर तथा महानगर तक है।**[1]

नगरीय भूगोल को बस्ती भूगोल के अंग के रूप में तथा भूगोल की एक अलग सुप्रतिष्ठित शाखा के रूप में भी देखा जा सकता है। इसका बस्ती भूगोल से ठीक वही सम्बन्ध है जो आर्थिक भूगोल से है। यह मानव भूगोल की बड़ी ही महत्वपूर्ण शाखा है, क्योंकि वर्तमान में नगरों तथा नगरीकरण का महत्व सबसे अधिक है तथा उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। **कोहन** ने नगरीय भूगोल से बस्ती भूगोल का सम्बन्ध बताते हुए लिखा है कि **''नगरीय भूगोल अंशतः बस्तियों के अध्ययन की एक प्रावस्था मात्र है जो तीव्र**

8:14 sample_9084.pdf content.kopykitab.com

सबसे अधिक है तथा उत्तरोत्तर बढ़ रहा है। **कोहन** ने नगरीय भूगोल से बस्ती भूगोल का सम्बन्ध बताते हुए लिखा है कि **''नगरीय भूगोल अंशतः बस्तियों के अध्ययन की एक प्रावस्था मात्र है जो तीव्र आन्तरिक विभिन्नता रखने वाले अत्यन्त जटिल क्षेत्रों पर लागू की जाती है।''**[2] इसका अर्थ यह भी हुआ कि नगरीय भूगोल तथा बस्ती भूगोल दोनों में बहुत-सी संकल्पनायें या अध्ययन के तरीके एक ही हैं जो इन दोनों को एक विज्ञान के रूप में बाँधने का कार्य करते हैं। इस प्रकार की संकल्पनाओं में, जो नगरीय भूगोल तथा बस्ती भूगोल दोनों में मिलती हैं, सेवा केन्द्रों की संकल्पना बहुत अच्छा उदाहरण प्रस्तुत करती है। सेवा केन्द्र ग्रामीण बस्तियों के रूप में तथा नगरीय केन्द्रों के रूप में भी होते हैं। अध्ययन विधियाँ इत्यादि इन दोनों के लिये मूलतः एक जैसे ही हैं। अतः सेवा केन्द्रों का अध्ययन दोनों शाखाओं में लगभग एक ही तरह से होता है और एक अध्ययन दूसरे का निश्चित रूप से पूरक होता है अर्थात् एक के बिना दूसरा अधूरा होता है, क्योंकि बस्तियों के तथाकथित पदानुक्रम (Hierarchy) में कार्य, आकार, जटिलता तथा केन्द्रीयता इत्यादि के आधार पर ग्रामीण बस्तियाँ प्रारम्भ में अर्थात् पदानुक्रम की सीढ़ी में सबसे नीचे और नगरीय बस्तियाँ ऊपरी छोर की तरफ स्थित होती हैं। बीच में अर्द्धग्रामीण अथवा अर्द्धनगरीय बस्तियाँ होती हैं जिनका अध्ययन संक्रमणीय स्थिति के कारण दोनों में होता है।

उपर्युक्त बातों से स्पष्ट है कि नगरीय भूगोल बस्ती भूगोल का अंग होते हुए भी भूगोल की एक अलग सुविख्यात शाखा है। नगरीय बस्तियों की अलग तथा बड़ी भूमिका एवं निरन्तर बढ़ते हुए महत्व के कारण नगरीय भूगोल एक स्वतंत्र भौगोलिक विज्ञान के रूप में विकास कर चुका है और आज के भूगोलवेत्ताओं की एक बहुत बड़ी संख्या नगरीय क्षेत्रों के अध्ययन में लगी हुई हैं।

नगरीय भूगोल : अर्थ और परिभाषा
(Urban Geography : Meaning and Definition)

नगरीय भूगोल अंग्रेजी 'अरबन ज्योग्राफी' (Urban Geography) का हिन्दी रूपान्तर है। 'अरबन' शब्द लेटिन के 'अर्ब्स' (urbs) और 'अरबनस' (Urbanus) से बना है जिसका अर्थ है नगर (City) और नगर से सम्बन्धित या नगर में घटने वाला। सामान्य बोलचाल में नगर सिटी, टाउन और मेट्रोपोलिटन तीनों के लिये नगर प्रयोग किया जाता है, लेकिन वैज्ञानिक और प्रशासकीय दृष्टि से तीनों में अन्तर है। सिटी के लिये टाउन के लिये पुर या कस्बा, तथा मेट्रोपोलिटिन के लिये महानगर पारिभाषित शब्दावलियाँ हैं। भूगोलवेत्ताओं ने भी इस भेद की उपेक्षा की है। आर.ई. डिकिन्सन ने अपनी पुस्तक का नाम **'सिटी, रीजन इण्ड रीजनलिज्म'** (City, Region and Regionalism) रखा है, यद्धपि उसमें पुरों और महानगरों का भी विवेचन है।

इस भ्रम के निवारण के लिये ही **'अरबन'** शब्द गढ़ा गया है। यह पुर, नगर और महानगर तीनों का सामूहिक नाम है। जहाँ गाँव या ग्रामीण जीवन पद्धति से भिन्न जीवन है अर्थात् जहाँ नगर की जीवन पद्धति है, उसे नगरीय कहेंगे।

1. "It is concerned not only with the building grouped around the permanent farm dwelling, but also with the temporary camp of the hunter or herder, or with settlemment clusters or agglomerations running the scale from hamlet, to village, to town, to city and to metropolis. *–C.G. Ohn, op. cit., p. 130*
2. ".....urban geography is in part merely a special phase of settlement study applied to very complex areas possessing sharp internal differentiation." *–C.F. Kohn., op. cit., p. 139*

नगरीय का अर्थ (Meaning of Urbanization)— नगरीय जीवन की विशेषताओं का वर्णन करते हुए यह कहा जा सकता है कि नगरीय जीवन में कृत्रिम पर्यावरण होता है, उद्योग-व्यापार की प्रधानता होती है, जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है, सामाजिक विषमता होती है, मनुष्य अधिक अपरिचित व्यक्तियों के बीच रहता है तथा उसका दृष्टिकोण अपेक्षाकृत व्यक्तिवादी होता है।

ए.ई. स्मेल्स ने भूगोल के सन्दर्भ में 'अरबन' या नगरीय का अर्थ स्पष्ट करते हुये लिखा है— ''भूगोलवेत्ताओं के एक विशेष मनुष्य-निर्मित भूदृश्य को नगरीय मानना चाहिये।''[1] यदि आलोचनात्मक दृष्टि से व्याख्या पर विचार किया जाये, तो यह दोषपूर्ण प्रतीत होती है क्योंकि यदि मनुष्यकृत भूदृश्य नगरीय मान लिया जाय तो क्या गाँवों को देवताओं या राक्षसों द्वारा निर्मित भूदृश्य मानना पड़ेगा। वास्तव में, नगरीय शब्द की व्याख्या में नगरीय जीवन की विशेषताओं का समावेश होना आवश्यक है। मनुष्य निर्मित भूदृश्य तो दोनों हैं, लेकिन दोनों की विशेषतायें भिन्न हैं। डिकिन्सन ने स्पष्ट कहा है— **''नगरीय बस्ती की परिभाषा मूलभूत रूप में प्रकार्य का प्रश्न है, न कि जनसंख्या का।''**[2]

इस भ्रम के निवारण के लिये ही **'अरबन'** शब्द गढ़ा गया है। यह पुर, नगर और महानगर ती का सामूहिक नाम है। जहाँ गाँव या ग्रामीण जीवन पद्धति से भिन्न जीवन है अर्थात् जहाँ नगर की जीव पद्धति है, उसे नगरीय कहेंगे।

1. "It is concerned not only with the building grouped around the permanent farm dwelling, but also wi the temporary camp of the hunter or herder, or with settlemment clusters or agglomerations runni the scale from hamlet, to village, to town, to city and to metropolis. *–C.G. Ohn, op. cit., p. 1.*
2. ".....urban geography is in part merely a special phase of settlement study applied to very complex are possessing sharp internal differentiation." *–C.F. Kohn., op. cit., p. 1*

नगरीय का अर्थ (Meaning of Urbanization)– नगरीय जीवन की विशेषताओं का वर्णन कर हुए यह कहा जा सकता है कि नगरीय जीवन में कृत्रिम पर्यावरण होता है, उद्योग-व्यापार की प्रधानता हो है, जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है, सामाजिक विषमता होती है, मनुष्य अधिक अपरिचित व्यक्ति के बीच रहता है तथा उसका दृष्टिकोण अपेक्षाकृत व्यक्तिवादी होता है।

ए.ई. स्मेल्स ने भूगोल के सन्दर्भ में 'अरबन' या नगरीय का अर्थ स्पष्ट करते हुये लिख है– ''भूगोलवेत्ताओं के एक विशेष मनुष्य-निर्मित भूदृश्य को नगरीय मानना चाहिये।''[1] यदि आलोचनात्म दृष्टि से व्याख्या पर विचार किया जाये, तो यह दोषपूर्ण प्रतीत होती है क्योंकि यदि मनुष्यकृत भूदृश्य नगरी मान लिया जाय तो क्या गाँवों को देवताओं या राक्षसों द्वारा निर्मित भूदृश्य मानना पड़ेगा। वास्तव में, नगरी शब्द की व्याख्या में नगरीय जीवन की विशेषताओं का समावेश होना आवश्यक है। मनुष्य निर्मित भूदृश तो दोनों हैं, लेकिन दोनों की विशेषतायें भिन्न हैं। डिकिन्सन ने स्पष्ट कहा है– **''नगरीय बस्ती की परिभा मूलभूत रूप में प्रकार्य का प्रश्न है, न कि जनसंख्या का।''**[2]

आर. फ्रीडमेन ने ठीक लिखा है– 'नगर की प्रकृति को केवल जनसंख्या के आँकड़ों के आध पर पूर्ण रूप से व्यक्त नहीं किया जा सकता। यह अत्यधिक जटिल प्रघटना है, जिसमें इसके अन्तर्गत रह वाले लोगों के जीवन तथा आस-पास के क्षेत्र में होने वाले क्रियाकलापों के विभिन्न पक्ष सन्निहित हैं नग में अपेक्षाकृत घनी जनसंख्या होती है, जो परस्पर सम्बन्धित अनेक ऐसे अकृषि कार्यों में लगी होती है जिन द्वारा न्यूनाधिक रूप से व्यापक क्षेत्र में होने वाली क्रियाओं का अन्य क्षेत्रों में कार्य करने वाले लोगों के सा सामंजस्य तथा सम्बन्ध स्थापित किया जाता है।''

उपर्युक्त व्याख्या के आधार पर हम नगरीय भूगोल का अर्थ सरलता से समझ सकते हैं अर्था हम कह सकते हें कि नगर और भौगोलिक पर्यावरण के पारस्परिक सम्बन्ध का विश्लेषण नगरीय भूगो हैं।

एच.एम. मेयर ने नगरीय भूगोल के बारे में लिखा है–

'The centre interest of Urban Geography, as of all geography is man and the reciproc relationships between man, his work and the earth. It is concerned with interpreting t patterns and relationship that exist within urban areas, on the one hand and between urba areas and the non-urban areas that cities serve on the other.' एक अन्य स्थान पर मेयर और नगरीय अन्तर-सम्बन्धों की व्याख्या का मुख्य आधार पर बना हुआ है स और उसके बाह्य क्षेत्र के आर्थिक स्रोतों पर ही निर्भर करता है।

इस प्रकार नगरीय भूगोल एक तो नगर के भौतिक स्वरूप की भौगोलिक व्याख्या, दूसरे निवासि और ग्रामीण क्षेत्र के निवासियों के अन्तर-सम्बन्धों की व्याख्या, तीसरे नगर के विभिन्न प्रतिरूपों की व्याख और अन्त में नगर के आर्थिक पहलू और उससे प्रभावित होने वाले क्षेत्रों में परस्पर जो सम्बन्ध होता इनकी व्याख्या करता है। अतः भारत के विश्वविद्यालयों में नगरीय व ग्रामीण भूगोल का अलग-अल अध्ययन होता है।

नगरीय भूगोल की कुछ प्रमुख परिभाषाएँ (Important Definitions of Urban Geography)

(1) **स्टैम्प** के अनुसार– ''नगरीय भूगोल वस्तुतः नगरों और उनके विकास के सभी भौगोलि पक्षों का विस्तृत अध्ययन है।''[3]

(2) **मेयर** के अनुसार– ''नगरीय भूगोल, नगर के आर्थिक आधार, नगर के एक महत्वपूर्ण रूप मान